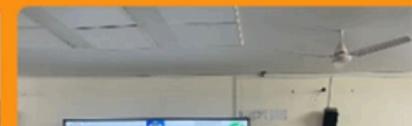


AUTISM DAY

AUTISM DAY QUIZ AT JK LON FOR POSTGRADUATES



WEBINAR ON AUTISM :DR SMITA GUPTA

FREE WEBINAR | ALL ARE WELCOME

AUTISM SPECTRUM DISORDER

**BRIDGING UNDERSTANDING
AND COMPASSION**



DR. SMITA GUPTA

**Autism Spectrum Disorder
Clinical Specialist**

30TH APRIL 2025 | 4:00 PM – 5:00 PM IST

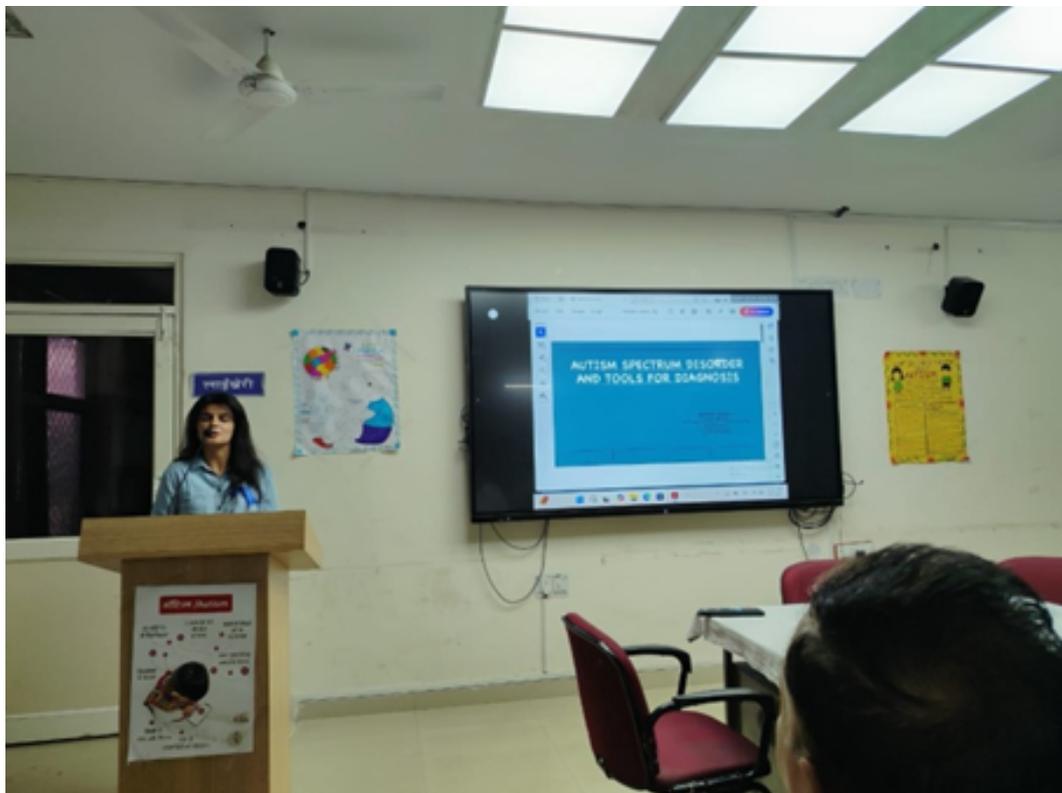
AUTISM AWARENESS AT CHILD DEVELOPMENT CENTRE ;DR MEENAL



PUBLIC AWARENESS ACTIVITY AT PUBLIC PARKS HOSPITAL OPDS ON AUTISM DAY AT HOPE HOSPITAL, TECHNOLOGY PARK, DACH, JAWAHAR CIRCLE PARK



AUTISM LECTURE ON AUTISM MIMICS AT JKLON



AUTISM PAMPHLET DISTRIBUTION AT PUBLIC PARKS :DR ATUL SHANKER



RELEASE OF AUTISM POSTER



ISSUED IN PUBLIC INTEREST

WORLD AUTISM AWARENESS DAY

2 APRIL 2025

IAP ki BAAT
COMMUNITY ke SAATH



ऑटिज़्म (Autism) क्या है?

ऑटिज़्म (Autism) एक न्यूरोडेवलपमेंटल स्थिति है जो व्यक्ति के संचार, सामाजिक व्यवहार और संवेदनशीलता को प्रभावित करती है। ऑटिज़्म बच्चों में एक ऐसी स्थिति है जो उनके बोलने, समझने और दूसरों से मेल-जोल में असर डालती है।

ऐसे बच्चे

- दूसरों से कम बातचीत कर सकते हैं
- आँखों में आँखें डालकर बात करने से बच सकते हैं।
- एक ही काम बार-बार करना पसंद कर सकते हैं और तेज़ आवाज़ या रोशनी से परेशान हो सकते हैं।
- बोलने में देरी हो सकती है। बच्चे में इसके लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं।

सही देखभाल, थेरेपी और प्यार भरा माहौल उन्हें सीखने और आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।

ऑटिज़्म जागरूकता बढ़ाने का उद्देश्य समाज में इसे बेहतर ढंग से समझना और स्वीकार्यता बढ़ाना है। हमें ऑटिज़्म से जुड़े मिथकों को दूर कर, इसके प्रति सहानुभूति और समर्थन विकसित करना चाहिए।

IAP- JAIPUR, RAJASTHAN



PARENTS CONTACT SESSION AT BABY LON ICAD



AWARENESS THROUGH NURSING QUIZ AT ZENANA HOSPITAL



PUBLIC AWARENESS THROUGH NEWS PAPER ON AUTISM

राजगंगा

राजस्थान | जयपुर, मंगलवार 2 अप्रैल



ऑटिज्म चाइल्ड को स्पेशल केयर और प्यार

राजगंगा, जयपुर। बच्चों में ऑटिज्म, पहले इस बीमारी की चपेट में काफी कम बच्चे आते थे, जबकि अब बच्चों में यह बीमारी काफी देखने को मिल रही है। ऑटिज्म पीड़ित बच्चे अपनी बात को सही तरीके से नहीं बता पाते हैं। उन्हें बोलने और सुनने में परेशानी होती है। आने वाली यंग जनरेशन को इस डिसऑर्डर से बचाने के लिए हर साल 2 अप्रैल को दुनियाभर में ऑटिज्म अवियरनेस डे मनाया जाता है। इस दिन के जरिये लोगों को जागरूक किया जाता है कि ऐसे बच्चे मंदबुद्धि नहीं होते हैं, बस उन्हें समाज से धुलने मिलने में झिझक होती है।



वर्ल्ड ऑटिज्म अवियरनेस डे

ताकि बच्चा हो हेल्दी

पेट्स अपने बच्चों को इस बीमारी से कैसे बचा सकते हैं, इस बारे में एसएमएस मेडिकल कॉलेज जयपुर के जेके लॉन हॉस्पिटल में एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. विष्णु पंसारी ने खास जानकारी दी। शिशु रोग चिकित्सक डॉ. पंसारी ने बताया कि उन्होंने बताया कि स्पष्ट रूप से चिकित्सा विज्ञान अभी ऑटिज्म के किसी विशेष कारणों पर नहीं पहुंच पाया है, लेकिन अनुयायिणी इसमें एक बहुत महत्वपूर्ण रोल प्ले करती है। कुछ ऐसे उपाय जरूर सुझाए गए हैं, जिनसे ऑटिज्म की संभावना को कम अवश्य किया जा सकता है। गर्भावस्था के समय शराब, धूम्रपान तथा नशीली दवाओं का सेवन बिल्कुल भी ना करें। ये सभी कारक गर्भवती शिशु के लिए भी हानिकारक साबित होते हैं जो कई तरह की जन्मजात विकृतियां, हृदय रोग तथा ऑटिज्म को जन्म दे सकती है। गर्भावस्था में किसी भी दवा का उपयोग अपने चिकित्सक की सलाह से लें।



घर में पेट्स तो ऑटिज्म वाले बच्चों में सुधार

ऑटिज्म, किसी होना है किसे नहीं, इसे ना तो पहले से जाना जा सकता है और न ही रोका जा सकता है। डेढ़ से दो साल की उम्र में ही ऑटिज्म है या नहीं वो माता-पिता से बच्चे के व्यवहार के बारे में जानकर समझना एक उपयोगी और आसान तरीका है। ऑटिज्म का वैसे तो इलाज उपलब्ध नहीं है, लेकिन जल्दी उपाय शुरू करने से बच्चे के व्यवहार, सीखने, बोलने की क्षमता में सुधार किया जा सकता है।



मिल कर करती है और दवा का उपयोग कुछ खास तरह के लक्षणों के इलाज के लिए ही किया जाता है। विदेशों में हुए शोध कार्य कहते हैं कि घर में पेट्स होना ऑटिज्म से ग्रस्त बच्चे के लिए भावनात्मक और मानसिक विकास में सहायक होता है। माता पिता को इसकी जानकारी और जागरूकता होना बेहद जरूरी है ताकि बच्चों के साथ वे सेंसिटिव ढंग से पेशा आ सकें।

ऑटिज्म से ग्रस्त बच्चे के लिए भावनात्मक और मानसिक विकास में सहायक होता है। माता पिता को इसकी जानकारी और जागरूकता होना बेहद जरूरी है ताकि बच्चों के साथ वे सेंसिटिव ढंग से पेशा आ सकें।

संतुलित आहार: गर्भवती माताओं को स्वास्थ्यवर्द्धक संतुलित आहार की सलाह दी जाती है जो की फल और रेशेदार खाने और विटामिन से भरपूर हो, खूब पानी पीना चाहिए। प्रेग्नेंसी से पहले और बाद में किसी भी प्रकार का वैक्सीन अपने चिकित्सक की सलाह से ही लें। महिला यदि पूर्व में किसी बीमारी से ग्रस्त है तो इसकी जानकारी डॉक्टर को दें। गर्भवती माताओं जो हाईवे, औद्योगिक इकाइयों के समीप या भीड़-भाड़ वाले इलाके में रहती हैं, उनके लिए प्रदूषण एक महत्वपूर्ण समस्या बन जाता है। वाहनों से फैलने वाले धुएँ, धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के पास आने से भी गर्भवती माताओं को बचना चाहिए।

तनाव एवं चिंता से दूर रहे: घरों में काम आने वाले व्हीपिंग पाउडर, टाइल्स क्लीनर गर्भवती मां और अज्ञाने शिशु के लिए खतरनाक साबित हो सकते हैं ऐसे रसायन जो की तेज गैस और सुशुब फैलते हैं। उनसे भी दूर रहने की सलाह दी जाती है। शोध में यह साबित हो चुकी है कि ऐसे वातावरणीय कारक जो गर्भवती मां में तनाव एवं चिंता को बढ़ाते हैं वो ऑटिज्म को बढ़ाती करते हैं। ऐसी परिस्थितियों से बचना चाहिए।

